Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

M.H.D. - 10

प्रेमचन्द की कहानियाँ

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Archana Sisodia,* M.A., M.Phil., Ph.D. (Hindi)

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 300/-

Content

प्रेमचन्द की कहानियाँ

Question Paper—June-2024 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—June-2023 (Solved) 1-3
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-3
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-3
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-3
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-3
Question Paper—December, 2019 (Solved) 1-3
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-3

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
1.	भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और प्रेमचन्द की कहानियाँ	1
2.	स्त्री जीवन और प्रेमचन्द	8
3.	दलित जीवन और प्रेमचन्द	17
4.	किसान समस्या, साम्प्रदायिकता की समस्या और प्रेमचंद	23
5.	प्रेमचन्द की कहानी-कला	31
6.	प्रेमचन्द की कहानियां और हिन्दी आलोचना	44
7.	मनोवृत्ति : विश्लेषण और मूल्यांकन	54
8.	बूढ़ी काकी : विश्लेषण और मूल्यांकन	62
9.	बेटों वाली विधवा : विश्लेषण और मूल्यांकन	72

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
10.	नमक का दारोगा : विश्लेषण और मूल्यांकन	82
11.	विध्वंस : विश्लेषण और मूल्यांकन	90
12.	गुल्ली डंडा : विश्लेषण और मूल्यांकन	98
13.	जुलूस : विश्लेषण और मूल्यांकन	106
14.	समर यात्रा : विश्लेषण और मूल्यांकन	118
15.	सुजान-भगत : विश्लेषण और मूल्यांकन	127
16.	दो बैलों की कथा : विश्लेषण और मूल्यांकन	135
17.	सवा सेर गेहूँ : विश्लेषण और मूल्यांकन	143
18.	सद्गति : विश्लेषण और मूल्यांकन	150
19.	कफन : विश्लेषण और मूल्यांकन	156

Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

प्रेमचंद की कहानियां

M.H.D.-10

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए

(क) मेहमानों ने भोजन किया। घरवालों ने भोजन किया। बाजेवाले भी भोजन कर चुके, परंतु बूढ़ी काकी को किसी ने न पूछ। बुद्धिराम और रूपा दोनों ही बूढ़ी काकी को उनकी निर्लज्जता के लिए दंड देने का निश्चय कर चुके थे। उनके बुढ़ापे पर, दीनता पर, हतज्ञान पर किसी को करुणा न आयी थी, अकेली लाडली उनके लिए कुढ़ रही थी।

उत्तर संदर्भ प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचंद की 'बूढ़ी काकी' से लिया गया है। बुद्धिराम के बेटे सुखराम के तिलक के अवसर पर घर में पकवान बने, सबने खाए, समारोह समाप्त हो गया, किंतु बूढ़ी काकी को किसी ने भोजन के लिए नहीं पूछा। उसी स्थिति का वर्णन करते हुए लेखक ने मानव की संवेदनहीनता पर व्यंग्य किया है।

व्याख्या सुखराम के तिलक की दावत में मेहमानों, घरवालों और बाजेवालों के भोजन करने के बाद भी बूढ़ी काकी को भोजन नहीं दिया गया। बुद्धिराम और रूपा दोनों काकी से परेशान थे, शायद इसलिए उन्होंने बूढ़ी काकी को भोजन न देकर उनकी निर्लज्जता का दंड देने का निश्चय किया था। एक बुजुर्ग व्यक्ति की इच्छा और मनोदशा क्या होती है, इसका किसी को ख्याल नहीं था, केवल बुद्धिराम की पुत्री लाडली बूढ़ी काकी को भोजन न दिए जाने पर परेशान थी।

विशेष 1. भाषा व्यंग्यात्मक है।

2. मानवीय संवेदनहीनता और बुजुर्गों की उपेक्षा पर व्यंग्य है।

3. बालमन की सरलता और सहृदयता की अभिव्यक्ति है।

(ख) दुनिया सोती थी पर दुनिया की जीभ जागती थी। सबेरे देखिए तो बालक-वृद्ध सब के मुँह में यही बात सुनायी देती थी। जिसे देखिए वही पंडित जी के इस व्यवहार पर टीका-टिप्पणी कर रहा था, निंदा की बौछारें हो रही थीं, मानो संसार से अब पापी का पाप कट गया। पानी को दूध के नाम से बेचने वाला ग्वाला, कल्पित रोजनामचे भरने वाले अधिकारी वर्ग, रेल में बिना टिकट सफर करने वाले बाबू लोग, जाली तस्तावेज बनाने वाले सेठ और साहूकार यह सब के देवताओं की भाँति गर्दनें चला रहे थे।

उत्तर सन्दर्भ प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचंद की कहानी 'नमक का दरोगा' से लिया गया है। प्रस्तुत गद्य में संसार से अब पापी का पाप कट गया है, इस बारे में बताया गया है।

व्याख्या पंडित अलोपीदीन रात में गिरफ्तार हुए ही थे कि खबर सब जगह फैल गई। दुनिया की जबान टीका-टिप्पणी करने से नहीं रूकती फिर चाहे रात हो या दिन। बुराई की लहर सभी जगह पूरे संसार में फैल गई। लेखक ने व्यंग्य करते हुए कहा है कि पंडित अलोपीदीन जैसे बेईमान व्यक्ति के पकड़े जाने पर समाज के बेईमान लोग जैसे दूध में पानी मिलाकर बेचने वाले, भ्रष्टाचारी सरकारी अधिकारी, रेल में बिना टिकट सफर करने वाले, जाली दस्तावेज बनाने वाले आदि लोग दारोगा वंशीधर के कार्य को निंदित बताते हुए बेइमानी के कार्य को सही ठहराकर खुद भी ईमानदार बनने का ढोंग कर रहे थे। दुनिया का काम होता है किसी-न-किसी पर बोलते रहना। रात के समय में भी वे यही काम करते हैं। जब तक बुराई न कर लें उन्हें नींद भी नहीं आती है।

विशेष 1. भाषा मुहावरेदार और व्यंग्यात्मक है।

2. ईमानदारी पर बेइमानी का वर्चस्व दिखाया है।

(ग) कोदई ने लाल-लाल आँखों से दरोगा की ओर देखा और जहर की तरह गुस्से को पी गये। आज अगर उनके सिर गृहस्थी का बखेड़ा न होता, लेना-देना न होता तो वह भी इसका मुँहतोड़ जवाब देते। जिस गृहस्थी पर उन्होंने अपने जीवन के पचास साल होम कर दिए थे, वह इस समय एक विशैले सर्प की भाँति उनकी आत्मा में लिपटी हुई थी।

उत्तर संदर्भ प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचंद की कहानी समर यात्रा से उद्धृत है। गाँव में सत्याग्रहियों का जत्था आने पर कोदई उनका स्वागत करता है। पुलिस द्वारा कोदई को धमकाने पर क्रोधित होता है, किंतु परिवार के बारे में सोचकर चुप हो जाता है और उसे इस

समय परिवार जीवन के देश के लिए कुछ करने के समय एक बाधा लगता है।

व्याख्या दरोगा द्वारा धमकाने पर कोदई क्रोध में आँखें लाल करके दरोगा की तरफ देखता है। वह जहर की तरह गुस्से को पी जाता है, क्योंकि उसके कुछ करने पर पुलिस परिवार को तंग करेगी। आज देश के समक्ष उसे परिवार का मोह नहीं है, किंतु जिस परिवार को पचास साल सम्हाला है। उसे इस तरह मुसीबत में डालना भी उसे ठीक नहीं लगता। आज उसे मातृभूमि के लिए कुछ करने के समय परिवार अपनी आत्मा पर विषैले सर्प की तरह लगता है।

विशेष 1. स्वतंत्रता संग्राम की बढ़ती लहर की अभिव्यक्ति है।

2. मातृभूमि के समक्ष सर्वस्व बलिदान की भावना को दिखाया है।

3. भाषा भावप्रवण है।

(घ) ओंकारनाथ नहीं, जरूर जोतो, खेत तुम्हारे हैं। मैं तुमसे छोड़ने को नहीं कहता हूँ। हरखू ने उन्हें बीस साल तक जोता। उन पर तुम्हारा हक है। लेकिन तुम देखते हो अब जमीन की दर कितनी बढ़ गयी है। तुम आठ रुपये बीघे पर जोतते थे, मुझे दस रुपये मिल रहे हैं। और नजराने के रुपये सौ अलग। तुम्हारे साथ रिआयत करके लगान वही रखता हूँ, पर नजराने के रुपये तुम्हें देने पड़ेंगे।

उत्तर संदर्भ प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचंद की कहानी बलिदान से लिया गया है। हरखू की मृत्यु के बाद जमींदार ओंकारनाथ गिरधारी से खेत जोतने के लिए नजराना माँगता है, किंतु गिरधारी देने की स्थिति में नहीं है। इसी संदर्भ में ओंकारनाथ गिरधारी को कह रहा है।

व्याख्या ओंकारनाथ गिरधारी से कहता है, तुम्हारे खेत हैं, तुम्हारा जोतने का हक है। मैं तुम्हें खेत छोड़ने को नहीं कर रहा हूँ। हरखू बीस सालों से खेत जोत रहा था, अब तुम्हारा हक खेत जोतने का है। आगे वह कहता है कि हरखू खेत जोतने का आठ रुपये बीघा अदा करता था, अब मुझे दूसरे लोग दस रुपये प्रति बीघा के हिसाब से किराया दे रहे हैं। साथ ही नजराने के रुपये अलग दे रहे हैं। मैं तुम्हारे साथ यह रिआयत कर सकता हूँ कि लगान आठ रुपये बीघा ही दे दो, किंतु नजराने का 100 रुपया तुम्हें देना पड़ेगा, जो गिरधारी के लिए संभव नहीं था।

विशेष 1. जमींदारों के शोषण को दिखाया है।

2. किसानों की विवशता का वर्णन है।

3. भाषा संवादात्मक है।

प्रश्न 2. प्रेमचंद के स्त्री संबंधी दृष्टिकोण पर प्रकाश डालिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-2, पृष्ठ-11, प्रश्न 1

प्रश्न 3. दलित चेतना के संदर्भ में 'सद्‌गति' कहानी का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-18, पृष्ठ-154, प्रश्न 4

प्रश्न 4. 'मनोवृत्ति' कहानी का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-7, पृष्ठ-56, 'मनोवृत्ति कहानी का कथा संक्षेप और विवेचन'

प्रश्न 5. कहानी-कला की दृष्टि से 'बेटों वाली विधवा' का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-9, पृष्ठ-72, 'कहानी कला में गुणात्मक परिवर्तन', पृष्ठ-78, प्रश्न 4

प्रश्न 6. 'नोहरी' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-14, पृष्ठ-122, प्रश्न 1

प्रश्न 7. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए

(क) प्रेमचंद की व्यंग्य दृष्टि

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-10, पृष्ठ-85, 'प्रेमचंद की व्यंग्य दृष्टि'

(ख) 'गुल्ली-डण्डा' में अभिव्यक्त सभ्यता-समीक्षा का स्वरूप

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-12, पृष्ठ-102, प्रश्न 2

(ग) 'मनोवृत्ति' का समय-बोध

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-7, पृष्ठ-56, 'मनोवृत्ति का समय बोध और कथाशिल्प'

(घ) किसान समस्या और प्रेमचंद

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-4, पृष्ठ-23, 'किसान समस्या और प्रेमचंद'

■■

Sample Preview
of
The Chapter

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

प्रेमचन्द की कहानियाँ

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और प्रेमचन्द की कहानियाँ 1

परिचय

प्रेमचंद ने लगभग तीन सौ से अधिक कहानियां लिखीं हैं तथा इनमें उन्होंने विविध विषयों की अपनी रचना का केन्द्र बनाया है, जिसमें प्राय: स्वाधीनता से संबंधित इनकी कहानियां विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उनकी इन्हीं कहानियों के आधार पर उनके पुत्र अमृतराय ने उन्हें स्वाधीनता आंदोलन के एक प्रतिबद्ध सिपाही की संज्ञा 'कलम का सिपाही' नामक उनकी जीवनी में दी है। प्रेमचन्द ने अपनी स्वाधीनता से संबंधित इन प्रमुख कहानियों में स्वतंत्रता आंदोलन के मार्मिक चित्रण के साथ ही 'स्वाधीनता' का एक व्यापक अर्थ ग्रहण करते हुए इसे अन्य राष्ट्रवादियों से नितांत अलग रूप में जाना व समझा है।

अध्याय का विहंगावलोकन

स्वाधीनता का आशय

स्वाधीनता प्राप्ति केवल प्रेमचन्द के लेखन का उद्देश्य न होकर उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य बनकर उभरा था, जिसके माध्यम से उन्होंने अपने साहित्य के अधिकांश भाग में स्वाधीनता आंदोलन के आंतरिक तथा बाह्य पक्षों की अत्यधिक सूक्ष्म जांच-पड़ताल की थी। अत: स्वाधीनता का संदर्भ प्रेमचन्द के लेखन का वह मूल तत्त्व है, जिसके कारण वे प्रारंभ से ही पूर्ण स्वराज के पक्षधर रहे थे और उनकी इस स्वराज की अवधारणा की पृष्ठभूमि में प्राय: देश के शोषित, वंचित तथा पीड़ित लोगों की वाणी मुखर होती थी। अत: प्रेमचंद की स्वाधीनता संबंधी जिन रचनाओं से जो मुख्य तथ्य उजागर होते हैं, उनके आधार पर प्रेमचन्द ने स्वाधीनता को इन निम्नलिखित आशयों के रूप में ग्रहण किया था

उपनिवेशवाद से मुक्ति

प्रेमचन्द के लेखन में स्वाधीनता का सर्वप्रथम और महत्त्वपूर्ण आशय अंग्रेजों की गुलामी से भारत की मुक्ति कराना था तथा वे किसी भी कीमत पर भारत को अंग्रेजी गुलामी से मुक्त देखना चाहते थे, क्योंकि वे यह मानते थे कि गुलामी सबसे बड़ा अभिशाप है।

किसानों की स्वाधीनता

स्वाधीनता का दूसरा आशय प्रेमचन्द ने किसानों की मुक्ति के संदर्भ के रूप में लिया था, जो कि स्वाधीनता के दोहरे अर्थ को उजागर करता है, क्योंकि प्रेमचन्द जहां एक ओर यह चाहते थे कि भारत अंग्रेजी दासता से मुक्ति प्राप्त करे तो दूसरी ओर स्वाधीन भारत के किसानों को भी वे जमींदारों की गुलामी से मुक्त देखना चाहते थे।

सामन्तवाद से व्यापक भारतीय समाज की मुक्ति

प्रेमचन्द ने स्वाधीनता का तीसरा प्रमुख आशय सामंतवाद के व्यापक प्रभाव से भारतीय समाज की मुक्ति के संदर्भ में लिया, क्योंकि प्रेमचन्द इस तथ्य से भली-भांति अवगत थे कि सामंती व्यवस्था के कारण समाज में व्याप्त वर्ण-भेद के कारण अन्य किसी भी प्रकार की राजनीतिक स्वाधीनता प्रभावी नहीं हो सकती हैं, क्योंकि जातिभेद अच्छे लोकतंत्र की स्थापना संभव नहीं होने देता है।

स्त्रियों की स्वाधीनता

स्वाधीनता का चौथा महत्त्वपूर्ण आशय ग्रहण करते हुए प्रेमचंद ने यह स्पष्ट किया था कि समाज की स्त्रियों को पूर्ण स्वाधीनता प्रदान किए बिना कोई भी अन्य स्वतंत्रता अपूर्ण ही मानी जाएगी, क्योंकि किसी भी समाज के अपेक्षित विकास तथा उन्नति के लिए स्त्रियों की पुरुष वर्चस्ववादी मानसिकता की शृंखलाओं से मुक्ति अत्यंत आवश्यक है।

दलित मुक्ति

समाज में परंपरागत रूढ़ियों के आधार पर प्रचलित छुआछूत की भावना को हमेशा के लिए समाप्त करने को प्रेमचन्द ने स्वाधीनता को एक अन्य महत्त्वपूर्ण आशय के रूप में ग्रहण किया था। प्रेमचन्द ने अपने जीवन के अंतिम दिनों के लेखन को दलित मुक्ति के प्रयास के लिए ही समर्पित कर दिया था।

दिमागी गुलामी से स्वाधीनता

मस्तिष्क या बौद्धिक स्वतंत्रता भी को प्रेमचंद ने स्वाधीनता का एक महत्त्वपूर्ण आशय माना था। उनके लिए सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्वाधीनता से पूर्व व्यक्ति को किसी भी प्रकार की मानसिक गुलामी से मुक्ति के रूप में ग्राह्य थी, क्योंकि राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक स्वाधीनता के लिए सर्वप्रथम व्यक्ति की दिमागी स्वाधीनता आवश्यक शर्त है।

मजदूरों की शोषण-दमन से मुक्ति

प्रेमचन्द ने किसानों की स्वाधीनता तथा शोषण-मुक्ति के साथ ही मजदूरों की स्वाधीनता का भी स्वप्न संजोया था इसलिए उन्होंने स्वाधीनता के एक अन्य आशय के रूप में मजदूरों की शोषण व दमन से मुक्ति का संदर्भ भी ग्रहण किया था, क्योंकि सभी प्रकार के शोषण से पूर्णत: मुक्त समाज ही एक सम्प्रभु राष्ट्र के रूप में स्थापित हो सकता है। अत: प्रेमचन्द की राष्ट्रवाद की अवधारणा पूर्ण रूप से स्वाधीनता के संदर्भ पर ही केन्द्रित है, क्योंकि स्वाधीनता के साथ-साथ ही राष्ट्रवाद का अर्थ भी उनके लिए उतना ही विस्तृत तथा व्यापक है। प्रेमचन्द की जब यह राष्ट्रधर्मी चेतना सामाजिक चेतना से संयुक्त होती है, तो वह मानवधर्मी बनकर प्रकट होती है।

स्वाधीनता आंदोलन का चित्रण

प्रेमचन्द ने अपनी अधिकांश कहानियों में स्वाधीनता आंदोलन का सजीव चित्रण किया है और उनके लिए स्वाधीनता का अर्थ विदेशियों को देश से बाहर करके आत्म-परिष्कार करना था। स्वाधीनता आंदोलन का चित्रण करते समय उन्होंने प्राय: अंग्रेजी कूटनीति तथा भारतीयों के प्रति उनका दृष्टिकोण, स्वराज के लिए किए जाने वाले प्रयास, स्वदेशी तथा शराबबंदी जैसे आंदोलनों में भाग लेकर संघर्ष करने वाले लोगों के साथ स्वाधीनता आंदोलन के प्रति सभी वर्गों के विचारों को भी उजागर किया है।

अपनी 'अधिकार चिंता' कहानी में जानवरों के माध्यम से प्रेमचन्द अंग्रेजों की कूटनीति का खुलासा करते हुए चलते हैं, जिसमें टामी भी अंग्रेजों की 'फूट डालो तथा शासन करो' की नीति के अनुरूप ही आचरण करता हुआ प्रतीत होता है तथा जिसके बारे में प्रेमचन्द लिखते भी हैं कि इस प्रकार कूटनीति पर चलने वालों को चाँदी नहीं प्राप्त होती है और इस नीति पर चलते हुए उन्हें टामी की तरह से असफलता ही प्राप्त होती है।

प्रेमचन्द ने स्वाधीनता आंदोलन के चित्रण में अंग्रेजों की भारतीयों को हेय तथा निष्कृष्ट या कहें कि जानवरों से भी बदतर समझे जाने वाली दृष्टि को उजागर करते हुए ऐसी दृष्टि के पक्ष में एक प्रकार की सार्थक घृणा की भावना को उत्पन्न करने का सफल प्रयास करते हुए दिखाई देते हैं। इसी के उदाहरणस्वरूप उनकी 'पत्नी से पति' नामक कहानी को लिया जा सकता है, जिसमें पति अंग्रेज सरकार का तो पत्नी कांग्रेस की समर्थक है। एक दिन पत्नी जब कांग्रेस के जलसे में भागीदारी करने के साथ दो सौ रुपये चंदा भी देती है, तो यहां प्रेमचन्द पति के हिन्दुस्तानी होने पर शर्मिंदा होने तथा पत्नी को हिन्दुस्तानी होने पर गौरव अनुभव करने की बात के आधार पर इन दोनों के चरित्र को उजागर करने का प्रयत्न करते हैं। इस कहानी में पत्नी अपने पति की अवहेलना तथा तिरस्कार करते हुए अपनी कटु बातों के आधार पर उसके हिन्दुस्तानी होने पर गर्व न करने की भावना को उजागर करती है, तो यहां प्रेमचन्द वास्तव में 'पति' जैसे टुच्चे व चमचे व्यक्तित्व चरित्र को सामने लाने का प्रयास करते हैं। इस कहानी में एक स्थान पर 'पति' को अंग्रेज अधिकार से गाली सुनते हुए भी दिखाया गया है, जिसके माध्यम से प्रेमचन्द यह दर्शाना चाहते हैं कि अपने हिमायती लोगों के प्रति जब अंग्रेजों का व्यवहार इतना कटु है, तो अन्य भारतीयों के प्रति उनका अत्यंत अमानवीय व्यवहार होना स्वाभाविक ही है।

'इस्तीफा' कहानी में भी 'फतहचन्द' नामक पात्र के चरित्र तथा उसके व्यवहार के माध्यम से प्रेमचन्द ने अंग्रेजी शासन के समर्थक तथा अपने भारतीय लोगों के प्रति उपेक्षा को उजागर किया है। इसके माध्यम से प्रेमचन्द का वास्तविक उद्देश्य अंग्रेजों के द्वारा किए जाने वाले अमानवीय व्यवहार के प्रति अंग्रेजी शासन के समर्थक लोगों के मन में घृणा की भावना उत्पन्न करना तथा स्वाधीनता की लड़ाई में तेजी लाकर भारत को शीघ्र ही स्वतंत्र कराना था।

'दीक्षा' नामक कहानी में भी अंग्रेज जज एक भारतीय वकील को बहुत-सी गालियां देते हुए दिखाया गया है तथा इसके साथ ही शराबखोरी की आदत को भी अंग्रेजी शासकों द्वारा अमानवीय आचरण करने के लिए बाध्य होने का मुख्य कारण दर्शाया गया है। 'शूद्रा' कहानी के माध्यम से अंग्रेज एजेंट द्वारा अपने जाल में फंसाकर लाई हुई स्त्रियों को अंत में अपनी वासना का शिकार बनाने की वास्तविकता को प्रेमचन्द अंग्रेजों द्वारा फैलाई गई इस अफवाह के जबाव स्वरूप दर्शाते हैं, जिसमें अंग्रेजों ने बाहर की दुनिया में भारतीयों के अधिक बर्बर होने की बात का प्रचार किया। 'कर्मभूमि' में भी मुन्नी के साथ अंग्रेजों द्वारा किए गए बलात्कार के प्रसंग को भी इसी संदर्भ में लिया जा सकता है।

'जेल' कहानी के माध्यम से जहां प्रेमचन्द अंग्रेजी शासन के विरोध हेतु एकजुटता की आवश्यकता को दर्शाते हुए 'मृदुला' के माध्यम से जिस भावना को अभिव्यक्त करते हैं, वह दिनोंदिन अमानवीय होती जा रही अंग्रेज सरकार का पूरा कच्चा चिट्ठा खोल देती है, जिसमें भारतीय लोगों में आत्मसम्मान तथा एकता के अभाव की स्थिति को उजागर किया है। इन कहानियों के माध्यम से प्रेमचन्द भारतीयों को अंग्रेजों के विरुद्ध एकजुटता के साथ खड़े होने का कौशल सिखा रहे हैं।

'चकमा' नामक कहानी में भी प्रेमचन्द ने स्वदेशी आंदोलन के दौरान किए जाने वाले अपने ही भारतीय लोगों के विश्वासघात को दर्शाया है, जिसका पात्र 'चन्दूमल' कांग्रेसियों का विश्वासपात्र होने के बावजूद उनके ही विरुद्ध गवाही दे देता है। इस प्रकार की कहानियों के आधार पर प्रेमचन्द तत्कालीन समाज के लोगों के आत्ममूल्यांकन की प्रवृत्ति को उजागर करते हैं। 'शान्ति' कहानी की नायिका श्यामा हालांकि एक बार तो अपने पति की प्रेरणा के कारण आधुनिका बन जाती है, किन्तु इस आधुनिकता की वास्तविकता को जानते ही वह पुन: अपने पुराने रूप को ग्रहण करके चरखा चलाना शुरू करती है, तो समाज के वही लोग जो उसे आधुनिका बनने पर सम्मान की दृष्टि से देखते थे, चरखे को लेकर हीनता

www.neerajbooks.com

बोध से ग्रस्त रहते हैं। अत: इन कहानियों के माध्यम स्वाधीनता आंदोलन के दौरान स्वदेशी अपनाने के व्रत को धारण करने की भावना के साथ अपने लोगों की स्वदेशी के प्रति हेय मानसिकता को उजागर करने का प्रयास भी बखूबी करते हैं।

प्रेमचन्द ने अपनी अधिकांश रचनाओं में अंग्रेजों द्वारा भारतीयों को दोयम दर्जे का नागरिक भी न मानकर उन्हें मात्र गुलाम माने जाने की भावनाओं को उजागर किया है। उनकी इसी मनुष्य विरोधी भावना का वर्णन करते हुए प्रेमचन्द इससे भी आगे बढ़ते हुए स्वराज के लिए किए जाने प्रयत्नों का वर्णन अपनी 'समर यात्रा' में करते हैं, जिसमें 'नोहरी' का चरित्र-चित्रण उनकी कलात्मकता तथा संवेदनशीलता का जीता-जागता प्रमाण है। उसमें वृद्धा होने के बावजूद अत्यधिक उत्साह है तथा वह सत्याग्रहियों का पूरा-पूरा साथ देती हुई अपने वक्तव्यों के माध्यम से भारतीयों के हृदय में सुप्त गौरव भावना को जागृत करने का कार्य करती है, तो 'जुलूस' कहानी में भी नायक इब्राहिम अली को देशहित में प्राण देने वाले तथा बीरबल सिंह द्वारा पत्नी के स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेने पर बाधा खड़ी करने की स्थिति को प्रेमचन्द दर्शाते हैं।

प्रेमचन्द इस तथ्य को स्पष्ट रूप से रेखांकित करते हैं कि स्वाधीनता आंदोलन में सफलता प्राप्त करने के लिए भारतीयों में अंग्रेजों के विरोध के लिए एकता होनी अनिवार्य है, क्योंकि विभाजित होकर कोई भी लड़ाई जीती नहीं जा सकती है। 'जेल' कहानी इसका सशक्त प्रमाण है।

प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों के माध्यम से भारतीय जनता के पूर्ण स्वराज प्राप्त करने की भावना को विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तथा स्वदेशी को अपनाने के संदर्भ को प्रस्तुत किया है। 'सुहाग की साड़ी', 'पत्नी से पति', 'तावान', 'चकमा', 'आहुति', 'शांति', 'दीक्षा', 'शराब की दुकान' तथा 'मैकू' आदि कहानियों में स्वदेशी आंदोलन को राष्ट्रीय व्रत के रूप में चित्रित किया गया है। इसके साथ ही इन कहानियों में शराबबंदी के साथ नारियों की उत्सर्ग भावना को चित्रित करके प्रेमचन्द ने स्वाधीनता आंदोलन के चित्रण में अपनी रचना कला का एक उदात्त रूप प्रस्तुत किया है।

राष्ट्रवाद का चित्रण

प्रेमचन्द एक ऐसे रचनाकार थे, जो स्वाधीनता जैसे गंभीर विषय पर बेहद ही सर्तक तथा आलोचनात्मक समीक्षा को ग्रहण करके उसे बखूबी चित्रित करने में सक्षम थे। प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों के माध्यम से राष्ट्रवाद की भावना के व्यापक परिप्रेक्ष्य में भारतीयों के एकजुट होने तथा पूर्ण स्वाधीनता को प्राप्त करने के मध्य आने वाली कुछ समस्याओं तथा कमजोरियों को उजागर करके उन्हें दूर करने के उपायों का चित्रण 'कानूनी कुमार', 'सती', समर-यात्रा', 'आहुति', 'मैकू', 'हिंसा परमो धर्मः', 'जिहाद', 'मुक्ति धन' एवं 'पंच-परमेश्वर' जैसी कहानियों में किया है।

स्वाधीनता आंदोलन में सफलता प्राप्त करने के लिए यह अनिवार्य था कि लोग धार्मिक कट्टरताओं की सीमा रेखा से निकलकर संकीर्ण राष्ट्रवादी दृष्टि का परित्याग करें इसीलिए प्रेमचन्द ने भारतीय स्वाधीनता-संग्राम के दौरान विकसित होने वाली संकीर्ण राष्ट्रवादी भावनाओं को केन्द्र बनाकर 'आहुति' तथा 'बौड़म' जैसी कहानियां लिखी हैं। 'आहुति' नामक कहानी में प्रेमचन्द ने स्वयंसेवकों के त्याग का वर्णन करते हुए इसकी नायिका द्वारा अत्यंत गहराई तक बेधने वाला प्रश्न स्वराज के संदर्भ में खड़ा किया है। 'बौड़म' कहानी में मालदार लोगों के साथ ही एक बड़ा शोषित वर्ग भी आजादी के दीवानों को बौड़म ही समझता है। प्रेमचन्द ने इस कहानी में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि शोषित मध्यवर्ग भी अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए शासकों द्वारा दिए जाने वाले प्रलोभनों को प्राप्त करने के लिए अपने देश के लोगों के साथ धोखा भी कर सकता है।

'ब्रह्म का स्वांग' नामक कहानी में प्रेमचन्द उसके प्रमुख पात्र के माध्यम से अपने संशयों को भी एक ठोस आधार प्रदान करते हैं। इस कहानी का नायक स्त्रियों द्वारा राष्ट्रीय संघर्ष में सम्मिलित होने की बात के कारण दिखावे के लिए स्वयं भी इस आंदोलन में शामिल होने की बात कहता है, तो उसकी संकीर्ण विचारों की पत्नी, जो छुआछूत की भावना में अत्यधिक विश्वास करती है, वह भी पति का हृदय परिवर्तन होते ही अपनी सुध-बुध विस्मृत करके तन-मन से देश की सेवा करती है तथा अछूतों को घर में सम्मान देने लगती है, किन्तु यह बात उसके पति को अच्छी नहीं लगती है और वह दिखाने के लिए स्वाधीनता आंदोलन में भी राष्ट्रीयता के नाम पर अपना स्वार्थ सिद्ध करने की कोशिश करता है, जो कि अपने वर्चस्व को दृढ़ रखने के लिए अनेक प्रकार की साजिशों में शामिल होता है। प्रेमचन्द के लिए यह एक प्रकार का चिन्ता का विषय है कि इस देश के समृद्ध जमींदार, राजे-रजवाड़ों से संबंधित लोग तथा आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न व्यक्ति अपने ही देश के गरीब भाइयों की उन्नति तथा उसके विकास के बारे में कुछ भी नहीं सोचते हैं। 'आहुति' तथा 'ब्रह्म का स्वांग' नामक कहानियों के साथ ही प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास 'गबन' में भी इन्हीं विचारों को 'देवीदीन' के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

प्रेमचन्द एक उन्नतिशील राष्ट्रवाद के मार्ग में जाति व्यवस्था की मानसिकता को अत्यंत हानिकारक मानते थे इसलिए वे जाति व्यवस्था को समूल उखाड़ फेंकना अपना प्रमुख उद्देश्य मानते थे। इसकी अनिवार्यता को दर्शाने के लिए 'सौभाग्य के कीड़े' नामक कहानी में प्रेमचन्द यह चित्रित करते हैं कि ब्राह्मण होने के लिए ब्राह्मण के घर में पैदा होना आवश्यक नहीं है। वास्तव में व्यक्ति अपने शील, विनय तथा आचार, प्रेम व विद्या आदि गुणों के आधार पर ही ब्राह्मण कहलाने के लिए योग्य है। 'मुक्ति-मार्ग' कहानी में भी प्रेमचन्द धार्मिक विद्वेष को भुलाकर आपसी प्रेम-भावना तथा भाईचारे की भावना को बनाये रखने का समर्थन करते हुए प्रतीत होते हैं, क्योंकि धार्मिक विद्वेष, अंधविश्वास तथा कुरीतियां राष्ट्र की प्रगतिशीलता के मध्य बहुत बड़ी बाधा हैं। 'दीक्षा' कहानी के माध्यम से प्रेमचन्द राष्ट्र के नेतृत्व करने वाले लोगों के गंभीर आचरण तथा उन्हें आदर्श बन रहने की भावना को व्यक्त करते हैं, किन्तु यदि नेतृत्वकारी व्यक्ति ही स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख सकेंगे तो वे स्वयं के साथ-साथ दूसरों के विनाश को भी आमंत्रित करेंगे। अत: प्रेमचन्द कथनी व करनी में समानता के हिमायती थे। इस प्रकार प्रेमचन्द ने अपनी अधिकांश कहानियों में राष्ट्रवाद की व्यापकता के साथ ही उसमें व्याप्त संकीर्णता की भावना को भी गंभीरता के साथ दर्शाया है।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

स्वाधीनता आंदोलन और राष्ट्रवाद का अन्त:संबंध

प्रेमचन्द स्वाधीनता आंदोलन के सच्चे साधक थे, अत: उनका अधिकांश लेखन किसी-न-किसी रूप में इन्हीं के साथ प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ था। उनकी यह इच्छा थी कि भारतीय स्वतंत्र होकर अपने समतामूलक सिद्धांत के आधार पर अपना विकास स्वयं करें, जिसे उन्होंने सन 1930 ई. में पं. बनारसीदास चतुर्वेदी को लिखे एक-एक पत्र में अभिव्यक्त किया था, जिनका प्रकाशन मई सन 1999 में 'हंस' पत्रिका में हुआ था।

प्रेमचन्द अपने लेखन के माध्यम से स्वाधीनता-संग्राम के एक प्रतिबद्ध सिपाही के रूप में प्रकट होते हैं। प्रेमचन्द के लेखन के समय ही स्वाधीनता आंदोलन अपने चरम रूप में विद्यमान था और इसकी बड़ी सफलता के उपरांत राष्ट्रवाद एक अनिवार्य शस्त्र बनकर सामने उभरा। यह राष्ट्रवाद का वही एक रूप था, जिसमें लाखों लोग 'भारतमाता की जय' का उद्‌घोष करते हुए राष्ट्रीय आंदोलन में सब कुछ त्यागकर कूद पड़े थे और सबका एकमात्र लक्ष्य था अपने देश भारत को अंग्रेजी दासता से मुक्त कराना। इसके लिए यह आवश्यक था कि साहित्यकार भारत में रहने वाले लोगों के मन में देश के लिए मर-मिटने की भावना को उत्पन्न करें और यही कार्य प्रेमचन्द ने राष्ट्रवाद के अर्थ में स्वाधीनता आंदोलन से एक नया अर्थ प्राप्त करते हुए अपनी कहानियों के माध्यम से राष्ट्रवाद तथा स्वाधीनता संग्राम को एक ही सिक्के के दो पहलुओं के रूप में चित्रित करने का प्रयास किया। इसी आधार पर उन्होंने 'पत्नी से पति', 'समर-यात्रा' एवं 'जुलूस' जैसी कहानियों में राष्ट्रवाद का आश्रय स्वाधीनता आंदोलन को बल देने के लिए किया है। इसका एक उदाहरण 'समर-यात्रा' कहानी में सत्याग्रहियों द्वारा गाया जाने वाला यह गीत है

''एक दिन वह था कि हम सारे जहां में फर्द थे,
एक दिन यह है कि हम-सा बेहया कोई नहीं।
एक दिन वह था कि अपनी शान पर देते थे जान,
एक दिन यह है कि हम-सा बेहया कोई नहीं।''

इस प्रकार से 'नोहरी' भी राष्ट्रवाद की भावना से भरी हुई स्वाधीनता आंदोलन की सफलता की कामना करती है, तो 'आहुति' की नायिका भी ऐसी स्वाधीनता का स्वप्न संजोती है, जिसके आधार पर एक समतामूलक समाज का निर्माण किया जा सके तथा जिसमें किसी के साथ ऊँच-नीच का कोई भेदभाव न हो इसलिए 'आहुति' की यह नायिका संकीर्ण राष्ट्रवाद का सशक्त विरोध करती हुई प्रतीत होती है तथा इस संकीर्ण राष्ट्रवाद को ही प्रेमचन्द ने आधुनिक समाज का एक कोढ़ भी माना था, क्योंकि राष्ट्रवाद उनके लिए उतना ही मान्य था कि जबकि वह एक स्वाधीनता आंदोलन को एक शक्ति प्रदान करता है तथा इससे अधिक सीमा तक वे उसे आलोचनात्मक दृष्टि से ही देखते थे। अत: इस राष्ट्रवाद के रूप में उन्होंने अपनी कहानियों में एक प्रगतिशील विचारधारा को आकार प्रदान किया है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. प्रेमचन्द की कहानियों में चित्रित स्वाधीनता आंदोलन पर प्रकाश डालिए।

उत्तर प्रेमचन्द ने अपनी अधिकांश कहानियों में मुख्य रूप से स्वाधीनता आंदोलन का अत्यन्त सजीव चित्रण किया है और उनके लिए स्वाधीनता आन्दोलन का अर्थ था विदेशियों को अपने देश से भगाकर आत्म परिष्कार की भावना को विकसित करना। इसी स्वाधीनता आंदोलन का चित्रण करते हुए उन्होंने अपने लेखन में अंग्रेजों की कूटनीति के साथ ही भारतीयों के प्रति उनकी संकीर्ण दृष्टि तथा स्वराज के लिए होने वाले प्रयासों, स्वदेशी आंदोलन में भाग लेकर संघर्ष करने वालों, शराबबन्दी आंदोलन और स्वाधीनता आंदोलन के प्रति विभिन्न वर्गों के लोगों के विचारों को भी अत्यन्त सहजता के साथ चित्रित किया है।

'अधिकार चिन्ता' नामक कहानी में 'प्रेमचन्द जानवरों के माध्यम से अंग्रेजों की 'फूट डालो राज करो' के सिद्धान्त का खुलासा करते हैं। उनकी तरह ही उनका कुत्ता टामी भी चलता है इसलिए प्रेमचन्द लिखते हैं कि *''टामी ने एक नयी चाल चली। वह कभी किसी पशु से कहता, तुम्हारा फलां शत्रु तुम्हें मार डालने की तैयारी कर रहा है। किसी से कहता फलां तुमको गाली देता था। जंगल के जन्तु उसके चकमे में आकर आपस में लड़ जाते और टामी की चांदी हो जाती।''* लेकिन प्रेमचन्द इस बात को भली-भांति जानते थे कि इस प्रकार से कोई व्यक्ति अपने ही लोगों को लड़ाकर सशक्त नहीं हो सकता और इस प्रकार की कूटनीति का आचरण करने वाले एक दिन टामी की तरह ही हार जाएंगे।

अपनी कहानियों के माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन का चित्रण करते हुए प्रेमचन्द सबसे पहले अंग्रेजों की हिन्दुस्तानियों को प्राय: जानवर से भी हेय तथा निम्न समझने वाली अमानवीय दृष्टि का चित्रण करते हैं। प्रेमचन्द ने इस प्रकार की कहानियों के आधार पर अंग्रेजों की इस दृष्टि के प्रति सार्थक घृणा पैदा करने का सार्थक प्रयास किया। इसी संदर्भ में उनकी 'पत्नी से पति' शीर्षक कहानी को लिया जा सकता है, जिसमें पति अंग्रेज सरकार का हिमायती है और उसकी पत्नी कांग्रेस की पक्षधर है तथा पति को स्वयं के हिन्दुस्तानी होने पर शर्म आती है, लेकिन इसके विपरीत उसकी पत्नी को हिन्दुस्तानी होने का गर्व है। वस्तुत: प्रेमचद 'पति' जैसे स्वार्थी और खुशामदी व्यक्तित्व के चरित्र को सामने लाकर यह दिखाना चाहते थे कि इस देश में ऐसे कपूत भी मौजूद हैं प्रेमचन्द ने पति महोदय को अपने अंग्रेज ऑफिसर से बहुत-सी गाली सुनते हुए भी चित्रित किया है।

प्रेमचन्द की एक अन्य महत्त्वपूर्ण कहानी है 'इस्तीफा', जिसके नायक फतहचन्द एक दफ्तर में बाबू हैं तथा उनका अंग्रेज अधिकारी भारतीय लोगों को बात-बात पर गाली देता है और एक दिन वह हद कर देता है। स्वयं प्रेमचन्द के शब्दों में, *''साहब अब क्रोध को न बर्दाश्त कर सके। हण्टर लेकर दौड़े। चपरासी ने देखा, यहां खड़े रहने में खैरियत नहीं है, तो भाग खड़ा हुआ। फतहचन्द अभी तक चुपचाप खड़े थे। साहब चपरासी को न पाकर उनके पास आया और उनके दोनों कान पकड़कर हिला दिया। बोला तुम सूअर गुस्ताखी करता है?''* और इसके बाद आगे प्रेमचन्द यह लिखते हैं कि फतहचन्द दफ्तर के बाबू होने पर भी मनुष्य ही थे और एक मनुष्य के साथ अंग्रेज अधिकारी ऐसा अमानवीय करते थे। वस्तुत: प्रेमचन्द लोगों में इस व्यवहार के प्रति घृणा उत्पन्न कर स्वाधीनता की लड़ाई तेज कर भारत को जल्द ही अंग्रेजों की दासता से स्वाधीनता प्राप्त करवाना चाहते थे।

www.neerajbooks.com